

वैल्यू रिसर्च फंड क्लासिफिकेशन

ओवरव्यू

वैल्यू रिसर्च फंड्स को उनके पोर्टफोलियो के आधार पर कड़ाई से वर्गीकृत करता है। इसमें यही सबसे अहम है।

ये टेबल ऐसे विस्तृत नियम देती है जिनके आधार पर वैल्यू रिसर्च सभी म्यूचुअल फंड्स को उनके पोर्टफोलियो की खूबियों के आधार पर अलग-अलग कैटेगरी में रखता है।

VR फंड कैटेगरी

पोर्टफोलियो की खूबियां

इक्विटी फंड्स

लार्ज कैप	फंड्स जो कम से कम 80% निवेश लार्ज कैप स्टॉक्स में करते हैं
लार्ज और मिड कैप	फंड्स जो कम से कम 35% निवेश लार्ज, मिड और स्मॉल कैप (हरेक) में करते हैं
मल्टी कैप	फंड्स जो कम से कम 25% निवेश लार्ज, मिड और स्मॉल कैप (हरेक) में करते हैं
मिड कैप	फंड्स जो कम से कम 65% निवेश मिड कैप में करते हैं
स्मॉल कैप	फंड्स जो कम से कम 65% निवेश स्मॉल कैप में करते हैं
फ्लेक्सी कैप	फंड्स जो बिना किसी सीमा के लार्ज, मिड या स्मॉल कैप निवेश का कम से कम 65% इक्विटी में करते हैं
फोकस्ड	फंड्स जो कम से कम 80% निवेश 30 तक इक्विटी शेयरों में करते हैं, जिनमें लार्ज, मिड या स्मॉल कैप शेयरों पर कोई खास सीमा नहीं होती।
वैल्यू-ओरिएंटेड	फंड्स जो वैल्यू/ कॉन्ट्रिब्यूटिव इन्वेस्टमेंट स्ट्रेटजी फॉलो करते हैं और जिन्हें सेबी के क्लासिफिकेशन के मुताबिक 'वैल्यू' या 'कॉन्ट्रा' कैटेगरी में रखा गया है
ELSS	ऐसे इक्विटी फंड जिनका लॉक-इन पीरियड तीन साल का है और जिनमें सेक्शन 80C के तहत टैक्स की छूट मिलती है
इंटरनेशनल	फंड जो ज़्यादातर विदेशी इक्विटी में निवेश करते हैं

सेक्टर/थीमैटिक फंड्स

बैंकिंग	फंड्स जो कम से कम 80% बैंकिंग सेक्टर में निवेश करते हैं
इंफ्रास्ट्रक्चर	फंड्स जो कम से कम 80% इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में निवेश करते हैं
फार्मा	फंड्स जो कम से कम 80% फार्मास्युटिकल सेक्टर में निवेश करते हैं
टेक्नोलॉजी	फंड्स जो कम से कम 80% टेक्नोलॉजी सेक्टर में निवेश करते हैं
सेक्टरल-अन्य	ऐसे फंड, जो अपने स्कीम इन्फॉर्मेशन डॉक्यूमेंट (SID) में बताए गए किसी एक सेक्टर में कम से कम 80% निवेश करते हैं और जिनके लिए अलग से कोई फंड

	कैटेगरी नहीं बनाई गई है.
थीमैटिक अन्य	फंड्स जो कम से कम 80% किसी खास थीम में निवेश करते हैं जिसे फंड्स स्कीम डॉक्यूमेंट में दिया गया है, और जिसके लिए अलग से कोई फंड कैटेगरी मौजूद नहीं है
डिविडेंड यील्ड	फंड्स जो बड़े तौर पर डिविडेंड-यील्डिंग स्टॉक में निवेश करते हैं
MNC	फंड्स जो कम से कम 80% मल्टीनेशनल कंपनियों के MNC स्टॉक में निवेश करते हैं
एनर्जी	फंड्स जो कम से कम 80% ऐसी कंपनियों में निवेश करते हैं जो एनर्जी सेक्टर, जैसे पावर, ऑयल और गैस आदि की होती हैं
PSU	फंड्स जो कम से कम 80% पब्लिक सेक्टर कंपनियों में निवेश करते हैं
कन्ज़म्र्शन	फंड्स जो कम से कम 80% कन्ज़म्र्शन थीम में निवेश करते हैं
ESG	फंड्स जो कम से कम 80% ऐसी कंपनियों में निवेश करते हैं जिनमें इन्वायरमेंटल, सोशल और गवर्नेंस (ESG) का फैक्टर ज़्यादा होता है
ऑटो एंड ट्रांसपोर्टेशन	मुख्य रूप से शेयरों में निवेश करने वाले फंड, जो ऑटोमोटिव और उससे जुड़े व्यवसायों वाली कंपनियों पर केंद्रित हैं।
बिज़नेस साइकिल	वे फंड जो मुख्य रूप से शेयरों में निवेश करते हैं और बिज़नेस साइकिल का लाभ उठाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
इनोवेशन	वे फंड जो मुख्य रूप से शेयरों में निवेश करते हैं और इनोवेशन थीम का पालन करते हैं।
मैनुफैक्चरिंग	वे फंड जो मुख्य रूप से शेयरों में निवेश करते हैं और मैनुफैक्चरिंग थीम का पालन करते हैं।
क्वांट	वे फंड जो शेयरों में निवेश करते हैं, जिन्हें क्वांट मॉडल के आधार पर चुना गया है।
फ़ैक्टर-बेस्ड	फंड्स जो एक या ज़्यादा फ़ैक्टर (क्वालिटी, मोमेंटम, अल्फ़ा, कम उतार-चढ़ाव) के आधार पर चुने गए स्टॉक में निवेश करते हैं.
डेट फंड्स	
लॉन्ग ड्यूरेशन	फंड्स जिनकी पोर्टफ़ोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 7 साल से ज़्यादा होती है
मीडियम से	फंड्स जिनकी पोर्टफ़ोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 4 और 7 साल के बीच

लॉन्ग ड्यूरेशन	होती है; किसी संभावित विपरीत स्थिति के तहत - 1 से 7 साल
मीडियम ड्यूरेशन	फंड्स जिनकी पोर्टफोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 3 और 4 साल के बीच है; किसी संभावित विपरीत स्थिति के तहत - 1 से 4 साल
शॉर्ट ड्यूरेशन	फंड्स जिनकी पोर्टफोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 1 और 3 साल के बीच है
मनी मार्केट	फंड्स जो ऐसे मनी-मार्केट इन्स्ट्रुमेंट्स में निवेश करते हैं जिनकी मैच्योरिटी 1 साल तक हो
लो ड्यूरेशन	फंड्स जिनकी पोर्टफोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 6 और 12 महीने के बीच है
अल्ट्रा शॉर्ट ड्यूरेशन	फंड्स जिनकी पोर्टफोलियो के स्तर पर मैकाले अवधि 3 और 6 महीने के बीच है
लिक्विड फंड	फंड्स जो डेट और मनी-मार्केट इन्स्ट्रुमेंट्स में निवेश करते हैं जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों तक हो
ओवरनाइट फंड्स	फंड जो सिक्योरिटीज़ में निवेश करते हैं जिनकी मैच्योरिटी 1 दिन की हो
डायनैमिक बॉन्ड	डेट फंड्स जो कई अवधियों में निवेश करते हैं
कॉर्पोरेट बॉन्ड	फंड्स जो कम से कम 72% निवेश AA+ और इससे ऊपर के रेट वाले कॉर्पोरेट बॉन्ड में करते हैं
क्रेडिट रिस्क	फंड्स जो कम से कम 58.5% निवेश AA और इससे नीचे के रेट वाले कॉर्पोरेट बॉन्ड में करते हैं
बैंकिंग और PSU डेट	फंड्स जो कम से कम 72% निवेश बैंकों, PSUs, पब्लिक फ़ाइनांस इन्स्टीट्यूशन्स और म्यूनिसिपल बॉन्ड्स के डेट इन्स्ट्रुमेंट्स में करते हैं
फ़्लोटिंग	फंड्स जो कम से कम 58.5% निवेश फ़्लोटिंग-रेट इन्स्ट्रुमेंट्स में करते हैं (जिनमें फ़िक्स्ड रेट वाले जिन्हें फ़्लोटिंग रेट में बदल दिया गया हो, शामिल हैं)
गिल्ट	फंड्स जो कम से कम 80% निवेश गवरमेंट सिक्योरिटीज़ में करते हैं
लगातार 10-साल की अवधि के गिल्ट	फंड्स जो कम से कम 80% निवेश गवरमेंट सिक्योरिटीज़ में करते हैं, इस तरह से कि पोर्टफोलियो का मैकाले ड्यूरेशन 10 साल हो
FMP	पहले से तय टर्म के फ़िक्स्ड मेच्योरिटी प्लान
टार्गेट मेच्योरिटी	एक डेट स्कीम जिसकी एक खास मेच्योरिटी होती है और उन बॉन्ड्स में निवेश करती है जिनकी मेच्योरिटी संबंधित इंडेक्स के मुताबिक होती है.
दूसरे	फंड्स जो किसी भी मौजूदा डेट कैटेगरी में क्लासिफ़ाई नहीं होते

हाइब्रिड फंड्स

अग्रेसिव हाइब्रिड	फंड्स जो 65-80% इक्विटी, और बाक़ी का डेट में निवेश करते हैं
बैलेंस्ड हाइब्रिड	फंड्स जो कम से कम 40-60% इक्विटी, और बाक़ी का डेट में निवेश करते हैं
कंज़रवेटिव हाइब्रिड	फंड्स जो 10-25% निवेश इक्विटी, और बाक़ी का डेट में निवेश करते हैं
इक्विटी सेविंग्स	फंड्स जो कम से कम 65% इक्विटी और इक्विटी से जुड़े निवेशों में, और कम से कम 10% डेट में निवेश करते हैं
आर्बिट्राज	फंड्स जो आर्बिट्राज ऑपच्युनिटीज़ में निवेश करते हैं
डायनैमिक एसेट एलोकेशन	फंड्स जो इक्विटी और डेट में डायनैमिक तरीक़े से अपना एसेट एलोकेशन मैनेज करते हैं
मल्टी एसेट एलोकेशन	फंड्स जो कम से कम 3 अलग-अलग एसेट क्लास में निवेश करते हैं, जिसमें से हर एक में न्यूनतम 10% हो
इनकम प्लस आर्बिट्राज	ऐसे फंड जो अपनी कुल पूंजी का लगभग 65% तक ऋण (डेब्ट) में और शेष हिस्सा आर्बिट्राज अवसरों में निवेश करते हैं।
लाइफ़ साइकिल	इक्विटी, डेट, गोल्ड और सिल्वर जैसे अलग-अलग एसेट क्लास में 'ग्लाइड पाथ' स्ट्रैटेजी के आधार पर निवेश करने वाले फंड.

कमोडिटी फंड्स

गोल्ड	फंड्स जो गोल्ड में निवेश करते हैं
सिल्वर	फंड्स जो सिल्वर में निवेश करते हैं
गोल्ड और सिल्वर	गोल्ड और सिल्वर में निवेश करने वाले फंड

इन मोटे-मोटे नियमों के अलावा, कुछ सावधानियां भी हैं जिन्हें हम फंड को कैटेगरीज़ करने के लिए फ़ॉलो करते हैं:

1. नई कैटेगरी बनाने से बचना है, आम तौर पर सेक्टरल/थीमैटिक एरिया में, जिनमें 10 फंड हैं. ऐसा इसलिए है, क्योंकि किसी भी कैटेगरी में एक मायने रखने वाली तुलना के लिए, उसका एक तय न्यूनतम साइज़ होना ज़रूरी है. यह कई छोटी कैटेगरी बनाने से बचाता है जो सार्थक नहीं हैं. ऐसे सभी फंड्स को 'थीमैटिक-अन्य' या 'सेक्टरल-अन्य' कैटेगरी में रखा गया है.
2. कुछ फंड्स के बेसिक पोर्टफ़ोलियो की खूबियां समय-समय पर बदलती रहती हैं. इन मामलों में, हम

इन फंड्स को एक अलग कैटेगरी में रख देते हैं, जो इस आधार पर होता है कि क्या पोर्टफोलियो में किया गया ये बदलाव एक समय के दौरान लगातार बना रहने वाला हो गया है, या ये एक अस्थायी बदलाव है जो केवल कुछ महीनों तक ही रहेगा।

- कभी-कभी, किसी फंड का इन्वेस्टमेंट मैंडेट ऐसा होता है कि ये किसी भी मौजूदा फंड कैटेगरी में फिट नहीं होता। ऐसे में, हम उसे 'थीमैटिक-अन्य' या 'सेक्टरल-अन्य' के तौर पर कैटेगरीकरण कर देते हैं अगर वो फंड इक्विटी-ओरिएंटेड फंड होता है, और 'अदर' या अन्य के तौर पर कैटेगरीकरण कर दिया जाता है अगर वो एक डेट-ओरिएंटेड फंड होता है। उनके यूनिक इन्वेस्टमेंट मैंडेट के चलते, इन कैटेगरी के फंड्स की एक दूसरे से तुलना नहीं की जा सकती।

कुछ आम सवाल (FAQs)

1. क्या वैल्यू रिसर्च फंड कैटेगरी सेबी के क्लासिफिकेशन से अलग है?

हां, यह अलग है। हमने सेबी की कैटेगरी को ज्यों का त्यों नहीं अपनाया है।

मोटे तौर पर, सेबी जिन फंड्स को 'फोकस्ड', इंडेक्स/ETF, फंड्स ऑफ फंड्स और 'सॉल्यूशन-ओरिएंटेड' कैटेगरी में रखता है, हमने उन्हें उनके वास्तविक पोर्टफोलियो के आधार पर उस कैटेगरी में रखा है, जहां वे सबसे बेहतर फिट बैठते हैं। हमारा मानना है कि यह निवेशकों की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करता है।

2. जो स्टैंडर्ड कैटेगरी सेबी ने इंडस्ट्री के लिए बनाई हैं उनके बजाए वैल्यू रिसर्च एक अलग फंड के कैटेगरीकरण क्यों फॉलो करता है?

2017 के अंत में सेबी की री-कैटेगरीकरण करने की एक्सरसाइज से अलग-अलग फंड कैटेगरी में कुछ एकरूपता आई थी। इससे पहले, किसी भी फंड या किसी भी कैटेगरी की ऐसी कोई औपचारिक परिभाषा नहीं थी।

वहीं दूसरी ओर, वैल्यू रिसर्च ने अपनी स्थापना के बाद से ही फंड्स को उनके पोर्टफोलियो के आधार पर कैटेगरीकरण किया। इस सिद्धांत का पालन करते हुए, अलग-अलग फंड बहुत अच्छी तरह से अपना रंग और रूप (अपने पोर्टफोलियो के संदर्भ में) बदल सकते हैं और इसलिए जहां भी वे सबसे सटीक बैठते हैं, उसी के मुताबिक एक अलग सेट का हिस्सा बन सकते हैं। इसलिए, मिसाल के तौर पर, एक लार्ज-कैप फंड हो सकता है जो फ्लेक्सी-कैप फंड बन सकता है और दूसरे मौकों पर, स्मॉल-कैप फंड भी बन सकता है।

3. एक निवेशक के तौर पर वैल्यू रिसर्च का क्लासिफिकेशन आपकी कैसे मदद करता है?

सेबी के री-कैटेगरीकरण ने निश्चित तौर से एक स्थिरता ला दी है जिसके साथ AMCs को किसी

भी दी गए कैटेगरी में फंड के लिए स्टाइल की प्रिोरिटी का एक हद तक लगातार पालन करना होता है. इससे निवेशकों को यह जानने में मदद मिलती है कि वे क्या कर रहे हैं. एक तरह से, सेबी द्वारा रिस्क-ओ-मीटर की शुरूआत ने इसे और भी बढ़ावा दिया.

हालाँकि, अगर आप अपने दिमाग को इस बात से आज़ाद करना चाहते हैं कि आपकी ज़रूरतें कैसे पूरी होंगी, तो आपको अपनी खास ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है. वैल्यू रिसर्च की कैटेगरी आपको यही काम करने में मदद करती हैं.

मिसाल के तौर पर, मान लीजिए कि आप एक पैसिव इन्वेस्टर के तौर पर स्मॉल-कैप में निवेश करना चाहते हैं. फिर आपके लिए तर्कसंगत बात यह होगी कि S&P BSE 250 स्मॉलकैप TRI में निवेश करने वाला एक पैसिव फंड स्मॉल-कैप स्पेस में दूसरे सभी फंड्स के साथ तुलना कैसे करता है, न कि उनकी तुलना केवल सेगमेंट में पैसिव फंड्स से की जाए.

यहां, वैल्यू रिसर्च कैटेग्राइज़ेशन आपको ऐसा करने में मदद करता है. सेबी के कैटेग्राइज़ेशन के साथ, आप केवल उस स्पेस के पैसिव फंड्स से तुलना करेंगे, जो स्वाभाविक रूप से मानता है कि वो उस स्पेस के सभी एक्टिव फंड्स से बेहतर हैं, जो ज़रूरी नहीं कि ऐसा ही हो. और एक निवेशक के रूप में, आप उन सभी में से सबसे अच्छा फंड चुनना पसंद करेंगे जो आपकी खास ज़रूरत के लिए मुताबिक हो.